[This question paper contains 4 printed pages.]

1363 *आपका अनुक्रमांक* .....

B.A. (Hons.) बी. ए. (ऑनर्स) / I **D**

HINDI – Paper III

हिंदी – प्रश्न-पत्र III

(रीति काव्यधारा)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 38*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) चमकती चपला न, फेरत फिरंगै भट,
इंद्र को न चाप रूप बैरष समाज को।
धाए धुखा न छाए धूरि के पटल, मेघ,
गाजिबो न बाजिबो है दुंदुभि दराज को।
भौंसिला कें डरन डरानी रिपुरानी कहैं,
पिय भजौ, देखि उदौ पावस के साज को।
घन की घटा न, गज घटनि सनाह साजे,
'भूषण' भनत आयो सेन सिवराज को। (5)

P.T.O.

अथवा

भुज भुजगेस की ह्वै संगिनी भुजंगिनी सी,
खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के।
बखतर पारवरिन बीच धसि जाति मीन,
पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के।
रैया राय चंपति को छत्रसाल महाराज
'भूषन' सकत को बखानि यों बलन के।
पच्छी पर छीने ऐसे परे पर छीने बीर,
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।

(ख) भाल पै लाल गुलाल गुलाल सों गेरि गरैं गजरा अलबेलौ।
यों बनि बानिक सों 'पद्माकर' आये जु खेलन फाग तौ खेलौ।
पै इक या छबि देखिबे के लिए मो बिनती कै न झोरन झेलौ।।
रावरे रंग-रंगी अँखियान में ए बलबीर अबीर न मेलौ।।

अथवा

सजि ब्रज चंद पै चली यों मुखचंद जा को,
चंद चाँदनी को मुख मंद-सो करत जात।
कहै 'पद्माकर' त्यों सहज सुगंध ही के,
पुंज, वन-कुंजन में कंज-से भरत जात।
धरति जहाँई-जहाँ पग है सुप्यारी तहाँ,

मंजुल मजीठ ही की माठ-सी ढरत जात।
हारन तें हीरे ढरै सारी के किनारन तें,
बारन तें मुकुता हजारन झरत जात। (5)

(ग) बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देइ
ताही में चित्त देइ, बात जोई बनि आवै
दुर्जन हँसै न कोइ, चित्त में खता न पावै
कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती
आगे को सुख समुझि, होइ बीती सो बीती

अथवा

बरुनीन मैं नैन झुकै उझकै मनो खंजन प्रेम के जाले परे।
दिन औधि के कैसे गनौ सजनी अँगुरीन के पोरन छाले परे।
कवि 'ठाकुर' ऐसी कहा कहिये निज प्रीति करे के कसाले परे।
जिन लालन चाह करी इतनी तिन्हैं देखिबे के अब लाले परै।
(4)

2. भूषण की राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

भूषण की काव्य-कला का मूल्याँकन कीजिए। (8)

3. पद्माकर के काव्य में वर्णित संयोग शृंगार का विवेचन कीजिए।

अथवा

पद्माकर के काव्य-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए। (8)

4. गिरिधर के काव्य में नैतिकता का विवेचन कीजिए।

अथवा

ठाकुर की प्रेम-भावना का वर्णन कीजिए। (8)